# रौशन कुमार की कविताएँ

शोधार्थी, हिंदी विभाग
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय,
आरा, बिहार

## बापू का देश

बापू -
अगर आज तुम जिंदा होते
तो हमलोगों पर
शर्मिंदा होते
जिस देश से तुमने
पूरी दुनिया को
अहिंसा का पाठ पढ़ाया था ,
उस देश में
बहस गर्म है कि
हिंसा किसकी होनी चाहिए ?
लोगों की...
गायों की
सूअरों की
किसकी ?

## ठूठ बरगद

बरगद ठूठ हो गई है
पर जिंदा है
अब कोई पूजा करने नहीं आता
अब इसके शिराओं को पकड़कर
बच्चे झुला नहीं झुलते
कोई धागा नहीं बधता है
कोई इसके जड़ में पानी नहीं डालता
कोई राहगीर यहाँ छाँह नहीं ढूढ़ता
अब कोई पंचायत इसके तले नहीं होता
लेकिन बरगद हर उस
सुख - दुख
न्याय-अन्याय
का साक्षी है-
जो इस गाँव में हुआ है
बरगद गाँव का इतिहास लिए
अब भी खड़ा है
लेकिन कोई पढ़ने नहीं आता ।

वो छोटा सा बरगद
अब बड़ा हो गया है
गाँव की सारी हल-चल
अब वही होती है
छोटा बरगद बड़ा हो गया है।

## मेरे गाँव का मौसम बदलने लगा है

मेरे गाँव का मौसम बदलने लगा है
जो बाहर से तो अब भी
ठण्डी मालूम होती है
लेकिन –
अंदर ही अंदर

जलने लगा है।

दरारें....
जो दीवारो पर पहले भी थी
वो अब साफ-साफ दिखने लगी है।

दलानों में 'हेड लाइनों' पर
चर्चा होने लगी है
अखबारों के पन्ने
आँगन तक पहुँचने लगे है ।

पहले जहाँ –
चिड़ियों की चहचहट से
लोग उठा करते थे
वे मोबाईल के
रिंगटोन से उठने लगे है
पहले जहाँ –
पगड़ियाँ हुआ करती थी
वहाँ अब कोल तार की सड़के है
पगड़ियो पर पहले जहाँ
बैलों की घण्टी की टून-टून
साईकिल के टन-टन
सुनाई देती थी
अब हुआ कोल तार के सड़कों पर
नीले पीले लाल बत्तियों के
सिरन सुनाई देने लगी है
मेरे गाँव का मौसम बदलने लगा है।

## मीडिया

मेरे घर में आग लगी थी
मेरा पड़ोसी घर में बैठे
टेलीविजन पर मेरे जलते घर का
लाइव टेलीकास्ट देख रहा था ।

आग बुझी –
तब मेरा पड़ोसी मुझसे कर कहता है,
हाँ , देखा मैंने लाइव टेलीकास्ट टेलीविजन पर
आपके घर को जलते
बहुत सारे समान जले ! घंटो जले !

मैने आपका लाइव इण्टरयू भी देखा – सुना
आपने बतलाया –
करीब तीन – चार लाख का समान जला ?
मैंने उत्तर दिया -
जी हाँ ।

## पहले, अपने शहर से दिल भर आए तो सही !

तुम्हारे शहर को देखने मैं जरूर आऊँगा
पहले, अपने शहर से दिल भर आए तो सही !
वे गलियाँ जिनमें तुम रहा करती थी
सुना है -
वे गलियाँ और भी हसीन हो गयी है
पहले उन गलियों को देख तो लूँ ।

अभी हमारा शहर पत्थरों को रूलाना नहीं सीखा है
जिस दिन हमारा शहर ये हुनर सीख जाएगा
मैं उस दिन -
तुम्हारे शहर मैं रहूँगा
और तुम्हारे शहर को
तुम्हारी नजरों से देखने की कोशिश करूँगा ।
ये जानने की कोशिश करूँगा
कि कितने बड़े - बड़े पत्थरों के मकान में
ये मामूली- सी खिड़कियों के सीसे क्यों टूटे रहते है ?
घर की दीवारों पर अखबार के
साप्ताहिक रंगोली क्यों चिपके रहते है ?
तुम्हारे इस सभ्य शहर के सड़कों पर
विज्ञापन के अध-नंगे होडिंग क्यों सजे होते है ?
दुधमुहे बेटे को घर में
और कुत्तों को ऑफिस ले जाने का मतलब क्या है ?
नेम प्लेट के ठीक नीचे सावधान ! कुत्ते है या
कुत्तों से सावधान ! का क्या मतलब।
तुम्हारा शहर आँधी रात के बाद शहर क्यों होता?

तुम्हारे इस अटपटे से शहर को देखने में जरूर आऊँगा
पहले, अपने शहर से दिल भर आए तो सही।